International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

हिंदी सनेमा और हरियाणवी संस्कृति :सुल्तान फल्म के संदर्भ में।

डॉ. शशि रानी
एसोसिएट प्रोफेसर
डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

सिनेमा एकजनोन्मुखीमाध्यम है। जिसमें जीवन की बहुरंगी छवि देखने को मिलती है।फिल्मकारजीवन में घटित घटनाओं ,स्थितियों संबंधी अनुभूति ,भावों की अभिव्यंजना को शब्दों, गीत,संगीत औरदृश्यों के माध्यम से प्रस्तुत करता है और इस तरह वह जीवन से उत्पन्न अनुभूति को असीमित बना देता है।फिल्म में केवल पात्र और परिस्थितियों की आपसी टकराहट द्वारा मानवीयमनोविकारोंको रूपायित नहीं किया जाता अपितु सामाजिक हितार्थ और प्रभावशाली रूपांकन के लिए इनका पुनर्गठन और परिष्कार भी किया जाता है।इस उद्देश्य के लिएफिल्मकार अपनी आवश्यकता अनुसार अपनी पारंपरिक विरासतयानी लोक संस्कृति से पोषक तत्व ग्रहण करता है । इसके समावेश से अनुभूति सहज हीस्वसंवेद्यसे परसंवेद्य बन जाती है।लोकसंस्कृति का प्रेरणास्रोत इतना चिरंतन होता है कि उसकी धारा हमेशा लोगों को प्रभावित करती है । इसमें लोक परंपरा की ऐतिहासिक,लोक विश्वास कीमनोवैज्ञानिक और लोक रंजन की सामाजिक पृष्ठभूमि समायी रहती है।इनके उपयोग सेफिल्मकार अपने विचारों , भावों को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करताहै।हिंदी फिल्मों की कथावस्तु और प्रस्तुतीकरण में लोक संस्कृति के विभिन्न तत्वों का उपयोग आसानी से देखा जा सकता है । 1913 में राजा हरिश्चंद्र फिल्म से शुरू हुई है परंपरा कमोबेश रूप में आज तक विद्यमान है । अछूत कन्या, किसान कन्या ,रोटी, अछूत ,दो बीघा जमीन,मदर इंडिया,दिलवालेदुल्हनिया ले जायेंगे,आल्हाउदल,कश्मीर की कली, हीर रांझा,पाकीजा, लावारिस,

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

हम आपके हैं कौन,सोनी महिवाल,हिना,रुदाली, लगान आदि फिल्मों में ब्रज,अवधी,हरियाणवी, पंजाबी, कश्मीरी आदि में अनेक संस्कृतियों कालोकजीवन, लोक संवेदना और लोक चेतना रची बसी है। प्रस्तुत आलेख में सिनेमा में लोक संस्कृति के प्रभाव का आकलन सुल्तान फिल्म के संदर्भ में किया गया है। फिल्म में अभिव्यक्त लोक जीवन ,लोक संस्कार , वेशभूषा,लोकभाषा,सिनेमैटोग्राफी और सेट के आधार पर हरियाणवीलोकसंस्कृति का अवलोकन किया गया है। अध्ययन में मनोरंजन के साथ ही लोकजीवन की छवियों को देखने का प्रयास किया गया है जो फिल्म को जीवंत बनाती हैं।

बीज शब्द: लोक संस्कृति, लोक मानस,लोकजीवन,लोक संस्कार, लोकाचार,सिनेमैटोग्राफी

प्रस्तावना

लोक का जीवन ही लोक संस्कृति का आधार है।' लोक संस्कृति लोक तत्वों के समन्वय से निर्मित होती है।लोक संस्कृतिजीवन्तसंस्कृति है। भारतीय परंपरा में यह जीवन्त संस्कृतिपर्वों,उत्सवों, व्रतों, संस्कारों और अन्य रीति-रिवाजों के रूप में और अन्य रीति-रिवाजों के रूप में विपुलता से मिलती है ।' डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दों में 'लोक हमारे जीवन का महा समुद्र है , उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है ... अर्वाचीन मानव के लिए लोक सर्वोच्च प्रजापति है। लोक,लोककी धात्री सर्व-भूत माता पृथ्वी और लोक का व्यक्त रूप मानव, यही हमारे नए जीवन का अध्यात्मशरणहै। उसका कल्याण हमारी मुक्ति का द्वारा और निर्माण का नवीन रूप है । लोक पृथ्वी मानव , इसी त्रिलोकी में जीवन का कल्याण रूप है ।'इसीलोकमानस कीआशा- आकांक्षा सुख-दुख,हास-विलास सभी कुछ लोक संस्कृति में समाहित होता है इस सांस्कृतिक विरासत का फिल्मों में भरपूर उपयोग हुआ है।

वषय वस्तार

हरियाणवी लोक संस्कृति बहुत प्रसिद्ध है। यहां के सेंस ऑफ ह्यूमर की हिंदी सिनेमा मैं भी विशेष पहचान है। यहां का मानस सीधे स्वभाव का अपने मन से भावुक और प्रकृति में तुनक मिजाज है जिसकी बानगी इसकी लोक संस्कृति में सहज ही देखने को मिलती है।हरियाणवी हिंदी भाषी क्षेत्र के पश्चिम भाग में बोली जाने वाली बोली है । पश्चिमी हिंदी में हरियाणवी,खड़ी बोली या कौरवी,ब्रज,कन्नौजी और बुंदेलीबोलियां आती हैं। पश्चिमी हिंदी का क्षेत्र करनाल से जबलपुर तक माना जाता है । यह हरियाणा क्षेत्र की बोली है । जो दिल्ली प्रदेश,रोहतक, करनाल,कंवल,थानेश्वर,छिछरौली,मांडवी आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।हरियाणवी संस्कृति पर आधारित दंगल ,सुल्तान, NH10,किलदिल, तनु वेड्स मनु रिटर्न,पगड़ी:दऑनर,खापजैसीफिल्मों में हरियाणवी लोक जीवन,बोली-बानी, लोकगीत ,रीति रिवाज, परंपराएं यानी लोक संस्कृति की झलक सहज ही परिलक्षित होती है ।इन फिल्मों मेंहरियाणा की लोक समस्याओं को भी उकेरनेका प्रयासमिलता। दंगल और सुल्तान जैसी फ़िल्में दर्शकों को आकर्षित करने में कामयाब रही और बॉलीवुड ने इनसे खूब पैसा भी कमाया।

'सुल्तान' फिल्मकोहरियाणवी लोक संस्कृति के विविध तत्वोंहरियाणा की जीवन शैली और भाषा यी मिजाज ने हर स्तर पर समृद्ध किया है ।लोकमानस से जीवनी शक्ति प्राप्त करने के कारण इसमें लोक जीवन कीविविधताएं औरवाणीगत अभिव्यक्तियां समाहित हैं। जिससे इसमें रसमयता का संचार हुआ । अली अब्बासजफर के निर्देशन मैं बनी सुल्तान फिल्म 6 जुलाई 2016 को रिलीज हुईऔरफिल्मकी अवधि 170मिनटहै। आदित्य चोपड़ा इस फिल्म के निर्माता है। इस फिल्म का संपादन रामेश्वर भगत में किया है और संगीतकार विशाल शेखर हैं।यशराजफिल्म्स के बैनर तले रिलीज हुई इसफिल्म नेदेश-विदेश में दर्शकों

का दिल जीतकर केवल 12 दिनों में 500 करोड़ की कमायीकी।।इसफिल्म में मुख्य किरदार सलमान खान (सुल्तान अली खान) और अनुष्का शर्मा(आरफा)ने निभाया है।

कथ्य

देसी खेल कुश्ती पर आधारित फिल्म सुल्तान हरियाणा रेवाड़ी के एक छोटे से गांव बारोली की कहानी है। फिल्म एक कहानी के दो स्तर हैं एक सुल्तान और आरफा की पहलवानी का दूसरा सुल्तान और आरफा के प्रेम का ।सुल्तान अपनी दोस्त गोविंद के साथ केबल टीवी का काम करता है ।अपनी इसी दुनिया में मस्त सुल्तान कटी पतंग लूटने में माहिरहै। जीवन के प्रति गंभीर नहीं है वहींआरफा के जीवन का लक्ष्य निश्चित है। पहलवान की है बेटी ओलंपिक में भारत के लिए कुश्ती में स्वर्ण पदक जीतना चाहती है । एक दिन अचानकसुल्तान और आरफा की टक्कर हो जाती है।एक ही नजर में वह आपको प्यार करने लगता है। कुश्ती विजेता आरफासुल्तान का जीवन बदल देती है और उसकी वजह से सुल्तानदुनियाका सर्वश्रेष्ठ पहलवान बन जाता है।दिल्लीकॉमनवेल्थगेम्स 2010 ,इस्तांबुल में 2011,FILA विश्व कुश्ती चैंपियनशिप 2011 और लंदनओलंपिक 2012 मैं भारत का नाम रोशन करता है ।सुल्तान केवल रिंग में कुछ भी नहीं लगता बल्कि उसे अपनी वास्तविक जीवन में भी दंगल करना पड़ता है।

इस फिल्म की कहानी इस प्रकार हैकिसुल्तान अली खान एक मध्यम आयु का पूर्व पहलवान है जो हरियाणा के एक छोटे से शहर में रहता है । प्रो टेक डाउन लीग क मालिक आकाश ओबरॉय अपनी लिखो प्रसिद्ध करने के लिए भारतीय पहलवान को रखना चाहता है इस संबंध में वह सुल्तान से मिलता है लेकिन वह आकाश के प्रस्ताव को ठुकरा देता है इसकी वजह जानने के लिए वह उसके दोस्त गोविंद से मिलता है और इस तरह फ्लैशबैक में गोविंद सुल्तानके बीते आठ सालों कीकहानी बताताहै।सुल्तान का आरफा से प्यार , उसे

प्राप्त करने के लिए पहलवानी करना , मुकाबला जीतने पर आरफा से शादी, राष्ट्रीय स्तर पर पहलवान बनना,ओलंपिक स्वर्ण पदक , इसके बाद घमंडी हो जाना ,खूनन मिलने के कारण उसके बच्चे की मौत,आरफा का बच्चे की मौत के लिए से जिम्मेदार मानना, उसका सुल्तान से दूर हो जाना और इस घटना का सुल्तान को इतना आहत करनाकि गांव में ब्लड बैंक बनाना ही उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन जाता है।इस सारी घटना को जानने के बादआकाश सुल्तान को सपना पूरा करने के लिए पैसे देने का वायदाकरकेमना लेता है।फिटनेस और अभ्यास के बाद पहले मुकाबले में जीतता है लेकिन सेमीफाइनल में बुरी तरह घायल हो जाता है । डॉक्टरों द्वारा उसे लड़ाई ना करने के लिए कहना,आरफा के प्रेरित करने पर प्रतियोगिता जीतना,इनाम के पैसे से ब्लड बैंक बनाना दोनों का एक हो जाना और बच्ची का जन्म। रोमांच,मोहब्बत, खेल भावना और जीत के जुनून के ताने-बाने से बुने गए फिल्म मनोरंजन के साथ संदेश भी देती है।

लोक जीवन और परिवेश

फिल्ममें चित्रितरिश्तेनाते पिता,दादी, पत्नी, दोस्त, ससुरआदि और बहती हुई नदी, बड़े खेत,कच्ची सड़कें, तालाब सभी ग्रामीण परिवेश को साकार करते हैं। लोक जीवन में जैसे मनुष्य और प्रकृति दोनों एक दूसरे से जुड़े रहते हैं उसी प्रकार हमें फिल्म में दिखाई देते हैं इस फिल्म के टाइटल गीत में प्रकृति और मानव का संघर्ष देखते ही बनता है:

खून में तेरी मिट्टी /मिट्टी में तेरा खून/

ऊपर अल्ला /नीचे धरती /

बीच मेंतेरा जनून /रे सुल्तान...

अखाड़ेमैं लड़ने से पहले अखाड़े की मिट्टी को माथे से लगाना सुल्तान का पतंग लूटना, पतंग लूटते समय गलियों में तेजी से दौड़ना, भैंसों के ऊपर से उछलना, रुको बांधना और एक छत से दूसरी छतों पर छलांग लगाना आदि लोक जीवन के प्रसंगों को फिल्म में जीवंतता से दिखाया गया है।

लोक संस्कार

प्रत्येक लोक संस्कृति में अपने-अपने ढंग सेजन्म से लेकर मृत्यु तकअनेक लोक संस्कार मनाए जाते हैं।सुल्तान फिल्म में भी वैवाहिक संस्कार को दर्शाया गया है जो फिल्म की नीरसता को तोड़कर उसे नया जीवन प्रदान करता है। जब सुल्तान और आरफा का विवाह होता है तो एक तरफ सुल्तान और दूसरी तरफ आरफा और बीच में पर्दा पड़ा हुआ है। इस मौके पर दूल्हे का परिवार दुल्हन को मेहर देता है । इस फिल्म में मुस्लिम संस्कृतिकी निकाह यानी विवाह की रस्म का सुंदर फिल्मांकन हुआ है।

लोकगीत

लोक समाज में प्रचलित लोकगीतलोक के द्वारा रचित एवं गाए जाते हैं । हरियाणवी लोक संस्कृति में लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है ।लोकरंग में रचे बसे गीतों में जीवन की विकलप्यास मौजूद है। अनुभव की अंतरंगता यहां जिस लालित्य में प्रकट है वह जीवन की स्वीकृति का सूचक है।सुल्तान का पहले गीत 'बेबी को बेस पसंद है'मेंहरियाणवीशब्दों का खूबसूरती से प्रयोग किया गया है ।गीत को सुनकर ऐसा लगता हैकि हम हरियाणवी परिवेश मैं विचरण कर रहे हैं।

जग घुमेयाथारे जैसा ना कौये...

मैं भी नाचू,रिझाऊं सोणे यार को, चलो मैं तेरी रहा बुलैया।

इन गीतों को सुनकर जीता जागता हरियाणवी समाज हमारे अंदर समाविष्ट होने लगता है।

लोक भाषा

भाषा संस्कृति की वाहिका होती है। विभिन्न संस्कृतियों की जानकारी हमें भाषा के माध्यम से मिलती है।यहन केवल पात्र, परिस्थिति, परिवेशको जीवंतता प्रदानकरती है बल्कि उन्हें विश्वसनीय और प्रामाणिक भी बनाती है। सामान्य जन के जीवन परिदृश्यों को उकेरने के लिए फिल्म कार ने उसी की मनो भूमि पर उतर कर उनकी भाषा, बोलचाल को अपनीफिल्म मेंअपनाया है।सुल्तानजब अखाड़े में खेलने जाता है उस समय हरियाणवी भाषा में की गई एंकरिंग में हरियाणवी भाषा का प्रयोग दृश्य को जीवंत तो बनाता ही है साथ ही हरियाणवी परिवेश को भी साकार कर देता है ।इसी प्रकार दिल्ली के पात्र की भाषा उसी के अनुकूल है।पात्र और परिवेश के अनुकूल भाषा का प्रयोग कथ्य को सहज ही बोधगम्यबनाता है।सुल्तान को मिथकीय नायक की छवि देने के लिए रे सुल्तान शब्द की आवृत्ति की गई है। दोस्त उसे उत्साहित करने के लिए कई जगह कहता है रे सुल्तान ...करदे चढ़ाई उसके बोलने का अंदाज एक माहौल बनाता है । इसी तरहकुश्ती की एंकरिंग करने वाले व्यक्ति की हरियाणवी भाषा लोक परिवेश कीनिर्मितिमें तो सहायक है ही कुश्तीकेदृश्योंकी प्रभावात्मकताको भी बढ़ातीहै:

और तेरीकीऔरएकनिच्चे गेर दिया...

अरे पहलवाडों को ऐसे बिखेर रा है जैसे माचिस की तिल्याहैं।

औरएकपहलवाडनिच्चे।....

अरे! वाह!वाह! हरियाणा का शैर, हरियाणवी शान सुल्तान।

फिल्म के संवादों में भी हरियाणवी भाषा सौंदर्य की छटा निरंतर बनी रहती है:

सुल्तान: अरे,बावड़ेदेखकेनी चला जात्ताहै।

आरफा:तेरी तोमैं! उल्टाबाईक के निच्चे घुसा आरा है।... समझी साले छिछोरे लौंड़े,थारीबजह स देस का बेड़ागर्ग हो या है।

हरियाणवी मिट्टी में लिपटी इस फिल्म की सिनेमैटोग्राफी और उसके विषय को फिल्म के किरदारोंने बखूबी निभाया है:

*बालबाल बच गए गोविन्द,वरना किसीऔरकी लुगाईमंगानी पड़ती।

*असली पहलवान की पहचान अखाड़े में ना ही जिंदगी में होवे हैं ताकि जब जिंदगी तुम्हें पटके तो तुम फिर खड़े हो और ऐसा दाब मारो की जिंदगी चित हो जाए।

*मन्नैजिस पहलवानीकागरूर थाउसी न मन्नैपटका ।

हरियाणवी संवाददर्शकों पर अपनी छाप छोड़ने में सफल रहे हैं। जहां तक वेशभूषाका संबंधहै,सुल्तान हरियाणा के छोरों की तरहकुर्तापजामा पहनते नजर आए हैं आरफा भी हरियाणवी छोरी की तरह सूट और सलेटी सलवार पहने नजर आती है गांव की महिलाएं कमीज और लहंगा पहने हुए घुंघटकिए हुए हैं।

सुल्तान फिल्म की सिनेमैटोग्राफी यानी चलचित्र छायांकन भी बेहतरीन है।बारोली नामक गांव को दिखानेके लिए ऐसे सेट का निर्माण किया गया हैजोकि हर हाल में स्क्रिप्ट की मांग को पूरा करता हुआ दिखाई देता है। फिल्म की सिनेमैटोग्राफी की झलक कई सीनमें देखनेको मिलती है। गांव की प्रकृति, घर-बाहर,खेत- खलि हान,रहन-सहन, जीवन शैली,क्रियाकलाप आदि सभीदृश्य हरियाणवी लोक संस्कृति को मूर्तिमान करने में सफल रहे

हैं।इंडोर और आउटडोर सभी सेट वास्तविक प्रतीत होते हैं जैसे छोटे-छोटे घर,आस- पास की हवेलियां, छतों पर उपलेपथेहुए, अखाड़े की मिट्टी।सिनेमैटोग्राफरआर्टरीजुरावस्की ने ना केवल हरियाणा बल्कि कुश्ती और मार्शल आर्ट वाले सीन उम्दा तरीके से शूट किए हैं उन्होंने हर कुश्ती को अलग-अलग कोणों से दर्शाया है । दृश्य और दर्शक एक दूसरे में जैसे घुलमिल जाते है।मनोरंजन,रोचकता के साथ भावनात्मकता काभी समावेश है।

निष्कर्ष

नि:संदेहहरियाणवी लोक संस्कृति का प्रयोग सुल्तान फिल्म की रचनात्मकता को उर्वर बनाता है। लोक में जो चला जाने वाला है उसे सहेज कर और संभालकर रखने में सिनेमा की भूमिका महत्वपूर्ण है ।इस फिल्म में लोक संस्कृति की सोंधी मिट्टी की खुशबू को दर्शकों के साथ बांटने का प्रयास है। आज जब संस्कृति का पश्चिमीकरण हो रहा है और हमनिरंतर भौतिकतावाद की चपेट में आ रहे हैं । ऐसी स्थितियों में लोक संस्कृति आउटडेटेड नहीं है बल्कि यह जीवन से जुड़ाव का प्रतीक हैजोदर्शकोंको उसकीजड़औरजमीन से जोड़तीहै।कभी हार ना मानने का संदेश देने वाली यह फिल्म लोक जीवन की समस्याओं का सुंदर चित्रण करती है। जगह-जगह दीवारों पर सेव गर्लचाइल्ड के संदेश दे गए हैं।आरफा (अनुष्काशर्मा) अखाड़े में पुरुषों से कुश्ती लड़ती है, वही वैवाहिक जीवन में भी गरिमापूर्ण तरीके से अपने पक्ष कोरखकर समाज में लड़कियों केसम्मानऔरमहत्व को स्थापित करती है।हरियाणवी लोक संस्कृति में विद्यमान जिजीविषाइस फिल्ममें कथ्य, दृश्य , भाषा और संवेदनासभी स्तरों पर दृष्टिगत होती है। लोक जीवन और लोक संवेदना से अन्विति सिनेमा को युग संदर्भ ,से जोड़तीहै।इस रूप मेंयुग संदर्भसुल्तान फिल्म में भी दिखाई देता है।

संदर्भ

- के.वीदास,हरियाणा - ऐतिहासिक सिंहावलोकन
- गोविंद चातक,भारतीय लोक संस्कृति का संदर्भ: मध्य हिमालय
- श्याम परमार, लोक साहित्य विमर्श
- श्यामाचरणदुबे, मानव और संस्कृति
- डॉ. शशि शर्मा, प्रगतिशील कविता में लोकतत्त्व
- नंद भारद्वाज, संस्कृति ,जनसंचार और बाजार
- डॉ. अनिरुद्ध कुमार सुधांशु, लोक साहित्य
- त्रिलोचन पांडे, लोक साहित्य का अध्ययन
- सम्मेलन पत्रिका- लोक संस्कृति विशेषांक 2010
- विकीपीडिया